मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

मार्च 2024

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से छोटी हो रही चिड़िया 2

भारतीय ज्ञान परंपरा व भारत सांस्कृतिक पहचान 3

भारत को पुनर्जीवित करनी होगी भारतीय ज्ञान परंपरा 4

अंदाज... छात्रावास खेलकूद प्रतियोगिता के दौरान कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

सीसीएसयू की और ऊंची उड़ान

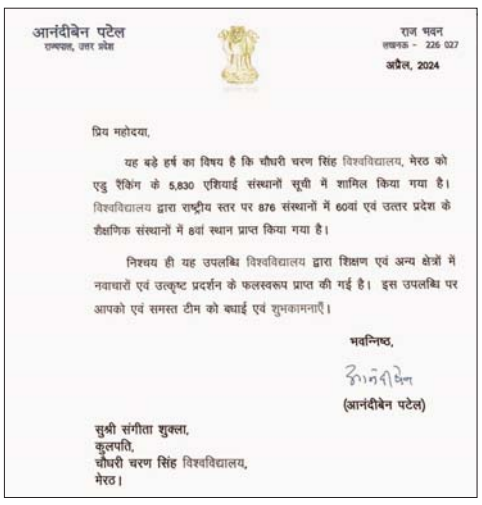

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027
अप्रैल, 2024

प्रिय महोदया,

यह बड़े हर्ष का विषय है कि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ को एडु रैंकिंग के 5,830 एशियाई संस्थानों सूची में शामिल किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 876 संस्थानों में 60वां एवं उत्तर प्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में 8वां स्थान प्राप्त किया गया है।

निश्चय ही यह उपलब्धि विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षण एवं अन्य क्षेत्रों में नवाचारों एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन के फलस्वरूप प्राप्त की गई है। इस उपलब्धि पर आपको एवं समस्त टीम को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवन्निष्ठ,
(आनंदीबेन पटेल)

सुश्री संगीता शुक्ला,
कुलपति,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ।

बढ़ते कदम...

सीसीएसयू की सफलता पर राज्यपाल और कुलाधिपति द्वारा कुलपति को भेजा गया बधाई व शुभकामना पत्र (बाएं) और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी देतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला (दाएं) और विवि के पदाधिकारी।

प्रथम श्रेणी के विश्वविद्यालय की स्वायत्तता हासिल की

- ऑनलाइन व दूरस्थ शिक्षा संग ऑफ कैंपस शुरू कर सकेगा
- नए कोर्स शुरू करने, फीस तय करने को अनुमति जरूरी नहीं

परिसर संवाददाता

मेरठ। प्रदेश के लखनऊ और कानपुर विश्वविद्यालय के बाद अब चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय को भी प्रथम श्रेणी के विश्वविद्यालय की स्वायत्तता मिल गई है। अब सीसीएसयू अपने क्षेत्र यानी छह जिलों में कहीं भी ऑफ कैंपस केंद्र शुरू कर सकता है। नए पाठ्यक्रम शुरू करने, पुराने व नए पाठ्यक्रमों की फीस तय करने के लिए अब सीसीसयू को किसी से अनुमति लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने शुक्रवार पांच अप्रैल को पत्र भेजकर सीसीएसयू को यह जानकारी दी है।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने बताया कि सीसीएसयू को श्रेणी–1 विश्वविद्यालयों के लिए स्वायत्तता के अंतर्गत निर्धारित सभी तरह के लाभ मिलेंगे। यह राज्य विश्वविद्यालय की रहेगा, लेकिन डीम्ड टू बी यूनिवर्सटीज की सभी सुविधाएं मिलेंगी। श्रेणी–1 विश्वविद्यालय की मान्यता यूजीसी से मिलते ही अब सीसीएसयू ओएल यानी ऑनलाइन व ओडीएल यानी दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रम शुरू कर सकता है। ऑनलाइन व ओडीएल में विश्वविद्यालय प्रैक्टिकल वाले विषयों को छोड़कर अन्य सभी पाठ्यक्रम संचालित करेगा। इनमें बीए, बीकाम, एमए, एमकाम, बीबीए, एमबीए, एमसीए सहित तमाम पाठ्यक्रम विद्यार्थी ऑनलाइन या दूरस्थ शिक्षा से कर सकेंगे। दूरस्था शिक्षा इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी या राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की तर्ज पर ले सकेंगे।

ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में विश्वविद्यालय की ओर से विभिन्न विषयों के टॉपिक पर वीडियो बनाकर विश्वविद्यालय के पोर्टल पर अपलोड की जाएगी। वहीं सप्ताह में एक या दो दिन विद्यार्थी अपने डाउट क्लीयर करने व ऑफलाइन क्लास के लिए सीसीएसयू परिसर में आ सकेंगे।

ओडीएल के लिए विश्वविद्यालय ने पाठ्यक्रम तैयार कर लिए हैं। विद्यार्थियों को इग्नू के स्तर का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय मुहैया कराएगा। ऑनलाइन व दूरस्थ शिक्षा भवन विश्वविद्यालय परिसर में अटल सभागार के सामने नए ब्लॉक में बन रहा है। ऑनलाइन व ओडीएल पाठ्यक्रमों में जुलाई सत्र से प्रवेश प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

पैगाम...

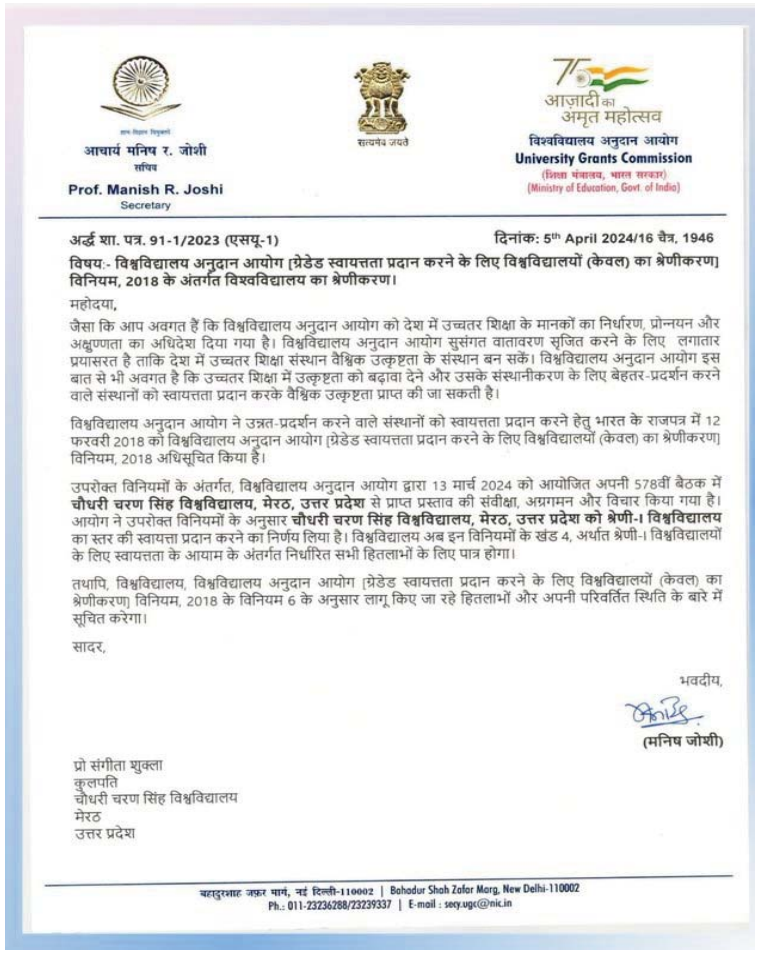

आचार्य मनिष र. जोशी
सचिव
Prof. Manish R. Joshi
Secretary

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Education, Govt. of India)

अर्द्ध शा. पत्र. 91-1/2023 (एसयू-1) दिनांक: 5th April 2024/16 चैत्र, 1946

विषय:- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग [ग्रेडेड स्वायत्तता प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालयों (केवल) का श्रेणीकरण] विनियम, 2018 के अंतर्गत विश्वविद्यालय का श्रेणीकरण।

महोदया,

जैसा कि आप अवगत हैं कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को देश में उच्चतर शिक्षा के मानकों का निर्धारण, प्रोन्नयन और अक्षुण्णता का अधिदेश दिया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सुसंगत वातावरण सृजित करने के लिए लगातार प्रयासरत है ताकि देश में उच्चतर शिक्षा संस्थान वैश्विक उत्कृष्टता के संस्थान बन सकें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस बात से भी अवगत है कि उच्चतर शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और उसके संस्थानीकरण के लिए बेहतर-प्रदर्शन करने वाले संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान करके वैश्विक उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्नत-प्रदर्शन करने वाले संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान करने हेतु भारत के राजपत्र में 12 फरवरी 2018 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (ग्रेडेड स्वायत्तता प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालयों (केवल) का श्रेणीकरण) विनियम, 2018 अधिसूचित किया है।

उपरोक्त विनियमों के अंतर्गत, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 13 मार्च 2024 को आयोजित अपनी 578वीं बैठक में **चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश** से प्राप्त प्रस्ताव की संवीक्षा, अग्रगमन और विचार किया गया है। आयोग ने उपरोक्त विनियमों के अनुसार **चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश को श्रेणी-I विश्वविद्यालय** का स्तर की स्वायत्ता प्रदान करने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय अब इन विनियमों के खंड 4, अर्थात श्रेणी-I विश्वविद्यालयों के लिए स्वायत्तता के आयाम के अंतर्गत निर्धारित सभी हितलाभों के लिए पात्र होगा।

तथापि, विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (ग्रेडेड स्वायत्तता प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालयों (केवल) का श्रेणीकरण) विनियम, 2018 के विनियम 6 के अनुसार लागू किए जा रहे हितलाभों और अपनी परिवर्तित स्थिति के बारे में सूचित करेगा।

सादर,

भवदीय,
(मनिष जोशी)

प्रो संगीता शुक्ला
कुलपति
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ
उत्तर प्रदेश

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 | Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002
Ph.: 011-23236288/23239337 | E-mail : secy.ugc@nic.in

यूजीसी की तरफ से सीसीएसयू की कुलपति को भेजा गया प्रथम श्रेणी की स्वायत्तता की सूचना देने वाला पत्र।

सिमैगो इंस्टीट्यूशंस रैंकिंग्स में सीसीएसयू को देश में 35वीं रैंक

वर्ल्ड, रीजन, कंट्री परसेंटाइल में जेएनयू के बराबर पहुंचा सीसीएसयू

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने सिमैगो इंस्टीट्यूशंस रैंकिंग्स–2024 में ऊंची उड़ान भरी है। शोध, नवाचार और सामाजिक प्रभाव पर आधारित इस रैंकिंग में देश के 324 उच्च शिक्षण संस्थानों को चुना गया। जेएनयू यानी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से रैंक में सीसीएसयू एक कदम ही पीछे है। सीसीएसयू को को देश में 35वीं रैंक के साथ 3,978 अंक मिले हैं। जेएनयू को 34वीं रैंक के साथ 3,967 अंक मिले हैं। वर्ल्ड परसेंटाइल में देनों को ओवरआल 44वीं रैंक, रीजन परसेंटाइल में 37वीं रैंक और कंट्री परसेंटाइल में 12वीं रैंक मिली है। तीनों ही वर्ग में शोध के क्षेत्र में भले ही थोड़ा पीछे हो लेकिन इनोवेशन के क्षेत्र में सीसीएसयू जेएनयू से आगे है।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने प्रेस वार्ता में बताया कि सिमैगो रैंकिंग में महज छह वर्ष में सीसीएसयू ने जेएनयू के 16 वर्ष के सफर की बराबर कर ली है। पिछले वर्ष सीसीएसयू को 66वीं रैंक मिली थी और क्यू–2 यानी क्वांटाइल–2 में स्थान मिला था। क्यू 1 में टाप–25 प्रतिशत शोध व नवाचार करने वाले विश्वविद्यालयों को रखा गया है। इस वर्ष 31 रैंक की उछाल के साथ 35वीं रैंक मिली और क्यू 1 में स्थान मिला है। इसमें देश के टाप–3 रैंक पर इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस और वीआइटी यूनिवर्सिटी है।

देश के टाप–100 संस्थानों में सीसीएसयू को सिमैगो रैंकिंग के साथ ही हर तरह के उच्च शिक्षण संस्थानों को लेकर हुई रैंकिंग में देश में एडु रैंक 60वीं और यूनि रैंक 92वीं मिली है।

सीसीएसयू को एडु रैंक विश्व में 14,131 विश्वविद्यालयों में से 2,369वीं, एशिया में 5,830 में से 726वीं, भारत में 876 में से 60वीं, प्रदेश में 79 में से 8वीं और मेरठ में पांच में से पहली रैंक मिली है। यूनि रैंक में सीसीएसयू को देश के 890 शिक्षण संस्थानों में से 92वीं रैंक मिली है।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने शोध व नवाचार में विश्वविद्यालय की स्थिति पर खुशी व्यक्त करते हुए एनआइआरएफ रैंकिंग मिलने की भी उम्मीद जताई। इस मौके पर कुलसचिव धीरेंद्र कुमार, वरिष्ठ आचार्य प्रोफेसर मृदुल गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

राज्य विश्वविद्यालयों में पहली रैंक

डीन रिसर्च प्रोफेसर बीर पाल सिंह ने बताया कि सिमैगो रैंकिंग में सीसीएसयू को प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों में पहली रैंक मिली है। वहीं देश भर के राज्य विश्वविद्यालयों में दूसरी रैंक मिली है। पहली रैंक कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय को मिला है। सीसीएसयू को अनुसंधान में स्कोपस से प्रकाशन और उद्धहरण के 11 मापों के आधार पर 50 प्रतिशत, इनोवेशन में पैटस्टैट से पेटेंट के आधार पर तीन मापों में 30 प्रतिशत और सामाजिक प्रभाव में आल्टमेट्रिक्स, वेब दृष्यमा द्वारा मापे गए सामाजिक प्रभाव के 20 प्रतिशत अंक मिले हैं। अनुसंधान में सीसीएसयू का 75वां स्थान व लखनऊ विश्वविद्यालय को 216वां स्थान, इनोवेशन यानी नवाचार में सीसीएसयू 48वें स्थान और लखनऊ विश्वविद्यालय 160वें स्थान पर है। वहीं सामाजिक प्रभाव में सीसीएसयू 32वें व लखनऊ विश्वविद्यालय 21वें स्थान पर है। लखनऊ को ओवरआल 91वें रैंक मिली है।

श्रेणी–1 की स्वायत्तता के ये लाभ मिलेंगे

- बिना अनुमति के सीसीएसयू नेशनल स्किल्स क्वालीफिकेशन फ्रेमवर्क के तहत कौशल पाठ्यक्रम शुरू कर सकता है।
- रिसर्च पार्क, इन्क्यूबेशन सेंटर, यूनिवर्सिटी सोसायटी लिंकेज सेंटर, स्वयं या पीपीपी मॉडल पर शुरू कर सकेंगे।
- विश्व के टॉप–500 रैंक वाले उच्च शिक्षण संस्थानों के विदेशी शिक्षकों को सीसीएसयू बिना अनुमति नियुक्त कर सकेगा।
- व्याप्त सीटों के साक्षेप 20 प्रतिशत तक विदेशी छात्रों को मेरिट के आधार पर प्रवेश दे सकेंगे।
- अच्छे शिक्षकों को आकर्षित करने के लिए मेरिट के आधार पर इंसेंटिव तय कर सकेंगे।
- यूजीसी की अनुमति के बिना दुनिया के टॉप–500 शिक्षण संस्थानों से सहयोग ले सकेंगे।
- सीसीएसयू के ऑफ कैंपस सेंटर या स्टडी सेंटर को वार्षिक निरीक्षण से छूट

हर जिले में दूरस्थ शिक्षा केंद्र इसी सत्र से

मेरठ। प्रभारी कुलपति प्रोफेसर मृदुल शर्मा ने बताया कि सीसीएसयू इसी सत्र यानी 2024–25 से ही ऑनलाइन और ओडीएल यानी दूरस्थ शिक्षा केंद्र की शुरुआत करेगा। सीसीएसयू के तहत आने वाले सभी छह जिलों में ओडीएल सेंटर खुलेंगे। ऑनलाइन पाठ्यक्रम की परीक्षाएं ऑनलाइन और ओडीएल की परीक्षाएं केंद्रों पर ऑफलाइन होंगी। फिलहाल उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि की तर्ज पर ही ओडीएल में फीस का निर्धारण होगा।

फेस पेंटिंग से किया मतदान को प्रेरित : वोट फॉर फ्यूचर, वोट फॉर बेटर इंडिया, माई वोट–माई राइट के संदेशों को चेहरों पर लिखकर ललित कला विभाग, एनएएस कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने लोगों का वोट डालने के लिए प्रेरित किया।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से छोटी हो रही चिड़िया

जंतु विज्ञान विभाग की ओर से 'एवियन एंडोक्राइनोलॉजी' पर छह दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग की ओर से 'एवियन एंडोक्राइनोलॉजी' पर छह दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें देश विदेश से आए वैज्ञानिकों व शोधार्थियों ने अपने वक्तव्य रखे।

संगोष्ठी में विदेशी विज्ञानियों ने जानकारी दी कि जलवायु परिवर्तन के कारण चिड़ियों के व्यवहार, उनका खाना और प्रजनन क्षमता प्रभावित हो रही है। उनके शरीर क्रिया विज्ञान में बदलाव हो रहा है। शहरों में मिलने वाली खाद्य सामग्री खाने के बाद चिड़ियों के बच्चे कमजोर पैदा हो रहे हैं। उनकी शरीर का आकार छोटा हो रहा है। साथ ही प्रजनन की दर भी कम हो रही है।

एनवायरनमेंटल इम्पैक्ट आन एंडक्ट्रीन प्रोग्रामिंग विषय पर मेक्सिको की वर्जीन कैनोइन, आस्ट्रेलिया की केट एल. बुचनैन, अमेरिका के फ्रेडरिक एंजलियर और अमेरिका की ही विक्टोरिया एम. काउट्स ने आस्ट्रेलियाई पक्षी जेब्रा फिंच पर हुए शोध के बाद यह जानकारी दी। जलवायु परिवर्तन में चिड़िया किस तरह के तनाव से गुजरते हुए खुद को ढाल रही है, विषय पर हुए शोध में चिंताजनक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। बहुत सी पक्षी प्रजातियों की घटती संख्या के लिए यह भी प्रमुख कारण है। जेब्रा फिंच पर शोध के बाद विज्ञानी अब गौरैया पर भी यही अध्ययन कर रहे हैं। विज्ञानी यह खोजने की कोशिश कर रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन में किस प्रजाति के पक्षी या अन्य वन्य जीव खुद को आसानी से ढालने और सुरक्षित रहने में सफल हो रहे हैं। उनके उन्हीं गुणों के जरिए अन्य प्रजातियों को भी सुरक्षित रखने पर शोध किया जा सकेगा।

हिंदू कॉलेज के डॉ. अमान बुनियादी ने कहा कि भारतीय कौए की प्रजाति पर रात्रि के प्रकाश प्रदूषण यानी लाइटों का प्रभाव पड़ता है। इससे मेलाटोनिन हार्मोन के संतुलन में कमी आती है।

यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया की मेरीलिन रामेनापस्की ने कहा कि प्रवास के समय इतने बड़े मार्ग को तय करने में पक्षी पर्यावरणीय संकेतों का सहारा लेते हैं। कनाडा की क्लारा जे. के अनुसार लाल रंग का प्रकाश प्रजनन के लिए अधिक प्रभावशाली है। फिनलैंड के टॉन जीजी ग्रूथियस ने कहा कि मां पर्यावरणीय परिवर्तनों से प्रभावित होती है, इसलिए बच्चों पर भी इनका प्रभाव पड़ता है। प्रोफेकर मेवा सिंह ने कहा कि जंगली जीवों की शहरों में एंट्री अनायास नहीं है। ईंट–पत्थरों की इमारतें जंगली जीवों की चाल बिगाड़ रही हैं। कारण है इंसानों ने जीवों के प्राकृतिक परिवेश को नष्ट कर दिया है। अमेरिका के वायने जे. कुएंजेल ने पक्षियों के प्रजनन एवं तनाव के न्यूरोइंड्रोक्राइन रेगुलेशन में सेप्टल ब्रेन रीजन के महत्व के बारे में बताया। अमेरिका के ही फर्राह एन मेडिसन ने गोल्डियन फिंच पक्षी के अलग–अलग कैरेक्टर, क्रिस्टीन आर लैटिन ने पक्षियों में नियोफोबिया, आस्ट्रेलिया के माइलिन एम मैरियेट ने जन्मपूर्व ध्वनियों के प्रभावों और विकास पर विचार रखे।

सीसीएसयू की जंतु विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता ने रेड हेडेड बंटिंग में माइक्रोकांड्रियल व्यवहार पर व्याख्यान दिया। वीवी रोबिन के अनुसार पर्वत क्षेत्रीय प्रवासी पक्षियों में संगीत क्षमता में भिन्नता पाई जाती है।

अंतिम दिन विभाग प्रोफेसर अशोक कुमार चौबे, कन्वीनर प्रोफेसर संजय कुमार भारद्वाज ने आभार प्रकट किया।

विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग की ओर से 'एवियन एंडोक्राइनोलॉजी' पर छह दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की कुछ झलकियां।

सस्ती और हल्की ग्रास कटर मशीन विकसित की

मेरठ। सर छोटूराम अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के मैकेनिकल इंजीनियरिंग की वर्कशॉप में शिक्षक इंजीनियर प्रवेश कुमार के निर्देशन में एक ग्रास कटर मशीन डेवलप की गई। यह मशीन बाजार में मिलने वाली मशीनों से लागत में काम होने के साथ वजन में काफी हल्की है तथा इसमें सिक्योरिटी फीचर्स भी ऐड किए गए हैं जिससे मशीन को चलाने वाले व्यक्ति को चोट लगने का खतरा कम हो जाता है।

मशीन का वजन कम होने के कारण अकेला व्यक्ति आराम से घास की कटाई कर पाएगा। मशीन के उद्घाटन कार्यक्रम में यह मशीन निदेशक शोध प्रोफेसर बीरपाल सिंह, डीएसडब्ल्यू प्रोफेसर भूपेंद्र सिंह, डीन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी प्रोफेसर संजय भारद्वाज, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नीरज सिंघल द्वारा संस्थान में माली के रूप में सेवा दे रहे कर्मचारियों को सौंपी गई ।

देश में होनी चाहिए चार डोप टेस्टिंग लैब

मेरठ। नेशनल डोप टेस्टिंग लैबोरेट्री के निदेशक व सीईओ प्रोफेसर डा. पूरन लाल साहू ने कहा कि भारत जैसे बड़े देश के चारों जोन में एक–एक डोप टेस्टिंग लैब होनी चाहिए। यूरोप में 17 लैब हैं, जबकि हमारे यहां केवल एक। संचालन के सख्त नियमों के कारण पूरी दुनिया में डोप टेस्टिंग लैब केवल 30 ही संचालित हैं। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के अटल सभागार में चरक स्कूल आफ फार्मेसी की ओर से आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस में आए डा. साहू ने कहा कि खिलाड़ियों का जीवन खानपान के मामले में बेहद सख्त अनुशासन से घिरा होता है। ऐसे में अक्सर डाइट सप्लीमेंट लेने वाले खिलाड़ी भी डोप टेस्टिंग में पाजिटिव आ जाते हैं।

देश में पहली बार नेशनल फारेंसिक साइंस लैब गुजरात के गांधीनगर में 2022 में प्रस्तावित हुई और पिछले महीने उद्घाटन हुआ। अब जो भी खिलाड़ी डाइट सप्लीमेंट लेते हैं या लेना चाहते हैं, वह अपना सैंपल उक्त लैब में भेज कर जांच करा सकते हैं जिससे वह जान सकेंगे कि वह पदार्थ उनके खाने योग्य है अथवा नहीं। दूसरी लैब हैदराबाद में बनकर तैयार होगी।

देश के एकमात्र नेशनल डोप टेस्टिंग लेबोरेट्री के निदेशक व सीईओ डा. पूरन लाल साहू ने कहा कि वर्ष 2022 में ही नेशनल एंटी डोपिंग एक्ट आया है। नियम बन रहे हैं। कानून लागू होने के बाद सर्च एंड सीजर व इंटेलिजेंस के क्षेत्र का दायरा बढ़ेगा। कस्टम, नारकोटिक्स, पुलिस और नाडा की टीम मिलकर काम करेंगे। इस अवसर पर फैकल्टी आफ फार्मेसी के डीन प्रोफेसर विभु साहनी, स्कूल आफ फार्मेसी के निदेशक प्रोफेसर शैलेंद्र शर्मा, प्रिंसिपल डा. वैशाली एम. पाटिल आदि उपस्थित रहे।

डॉ देवेंद्र कुमार को मिला पेटेंट

मेरठ। माइक्रोबायोलॉजी विभाग के असिस्टेंट प्रा. फेसर डॉक्टर देवेंद्र कुमार सूक्ष्म शैवाल पर अनुसंधान कर रहे है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक रूप से उपयोग में आने वाले सूक्ष्म शैवाल अपने आप में एक लघु ऊर्जा का बिजलीघर है, क्योंकि इसमें कई वर्णक पाए जाते है जिनकी एंटीऑक्सीडेंड एक्टिविटी बहुत ज्यादा है। जैव प्रौद्योगिकी के गतिशील क्षेत्र में एक जटिल समस्या है, की इन सब वर्णको को अनुसंधान में प्रयोग करने के लिए आसानी से निस्कर्षण नही किया जा सकता।

डॉक्टर देवेंद्र ने इन वर्णको को आसानी से निस्कर्षण करने के लिए एक पोर्टेबल डिवाइस को डिजाइन किया है। इस डिवाइस में उन्नत सौर पैनल और एक रिचार्जेबल बैटरी शामिल है, जो वर्णक निस्कर्षण की लागत को काफी हद तक कम करती है और जटिल प्रक्रिया को सरल बनाती है। अपने हल्के डिजाइन के साथ इस डिवाइस को प्रयोग करना भी आसान है। जल्द ही यह डिवाइस मार्केट में उपलब्ध होगी।

डॉक्टर देवेंद्र ने इस पोर्टेबल डिवाइस को पेटेंट कराया है। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जितेंद्र सिंह और विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने डॉक्टर देवेंद्र को इस उपलब्धि पर बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

12 ने गेट परीक्षा उत्तीर्ण की

मेरठ। सीसीएसयू के भौतिक विज्ञान विभाग के 12 छात्र–छात्राओं ने गेट (ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग) प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। इस परीक्षा में देशभर के विद्यार्थी भाग लेते हैं। इसमें विद्यार्थियों को देश के बड़े राष्ट्रीय संस्थान आईआईटी, एनआईटी और अंतरराष्ट्रीय संस्थान में उच्च शिक्षा के लिए अवसर मिलता है। परीक्षा के माध्यम से बीएआरसी, डीआरडीओ, ओएनजीसी आदि में सीधे साक्षात्कार का अवसर मिलता है।

परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों में तानिया, वैशाली, अदिति मुदगल, प्रज्ञा, सिमरन चौ. हान, अतुल तेवतिया, सामिया जैदी, वृंदा शर्मा, नेहा दक्ष, अमन भास्कर, अभिषेक सोम, मोहम्मद फैजल हैं। सफल विद्यार्थियों को विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार मलिक, प्रो. संजीव कुमार शर्मा, प्रो. बीर पाल सिंह, प्रो. अनुज कुमार, डॉ. योगेंद्र कुमार गौतम, डॉ. कविता शर्मा ने शुभकामनाएं दीं।

मतदाता जागरूकता पेंटिंग : ललित कला विभाग के छात्र–छात्राओं ने कचहरी में सीडीओ कार्यालय की चारदिवारी पर मतदाता जागरूकता पेंटिंग बनाकर जन समूह को जागरूक किया जिसे आते–जाते लोगों ने रुक–रुक कर देखा और उसकी प्रशंसा की।

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में 'भारतीय ज्ञान परंपरा और मीडिया' विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान परंपरा व भारत एक सांस्कृतिक पहचान

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विवि के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में 27 मार्च को 'भारतीय ज्ञान परंपरा और मीडिया' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। इसमें मुख्य वक्ता जेसी बोस विवि के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. पवन मलिक ने कहा भारतीय ज्ञान परंपरा तथा भारत एक सांस्कृतिक पहचान है। युवा सनातन को लेकर जागरूक है। संभावनाओं को संभव बनाने वाली है भारतीय परंपरा।

गौतमबुद्ध नगर विवि के पत्रकारिता विभाग में डीन प्रो. बंदना पांडे ने कहा वेदों में मौखिक संचार को जनसंचार का सबसे बड़ा माध्यम माना गया है। जहां शिक्षा है वहां संचार है। भारतीय ज्ञान परंपरा को संचार के पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है।

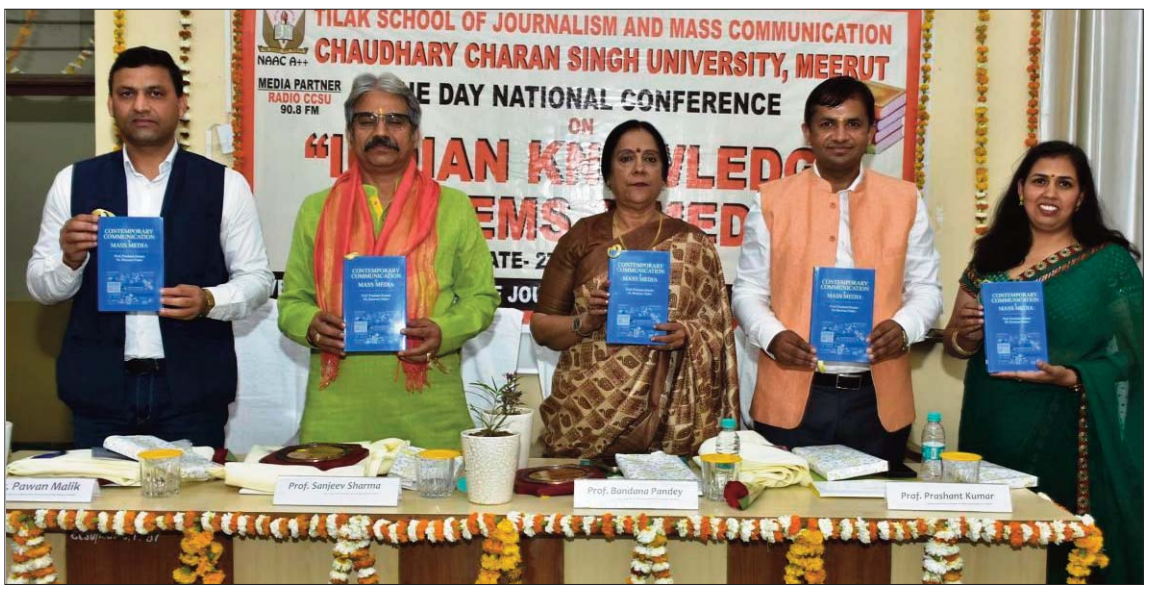

सेमिनार के दौरान प्रोफेसर प्रशांत कुमार और डॉ. बीनम यादव द्वारा लिखी गई पुस्तक का विमोचन करते प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा, प्रोफेसर पवन मलिक और प्रोफेसर बंदना पांडे।

अध्यक्षता करते हुए कला संकाय डीन प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा भारतीय ज्ञान परंपरा निरंतर बहती आई है। संवाद संचार का मुख्य कारक है। सुनने की परंपरा ही बोलने की परंपरा है। संचार के मूल तत्व परंपरा में ही विद्यमान हैं। जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रो. प्रशांत कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया।

संगोष्ठी के पहले व दूसरे तकनीकी सत्र में 16–16 शोधपत्र पढ़े गए। समापन पर मुख्य वक्ता पत्रकार सुरेंद्र सिंह ने कहा काल गणना भारत से दुनिया में गई थी। विक्रम संवत सबसे महत्वपूर्ण होता है।

मुख्य अतिथि डॉ. ताशा सिंह परिहार ने कहा विद्यार्थियों को एक क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। अध्यक्षता करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि के कुलपति प्रो. सुरेश ने कहा नारद जयंती को हम मानते हैं, लेकिन उसको हमने कितना आत्मसात किया है यह सोचने वाला विषय है।

इस दौरान तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रो. प्रशांत कुमार और बीनम यादव द्वारा लिखित पुस्तक कंटेम्परेरी कम्युनिकेशन एंड मास मीडिया का विमोचन किया गया। डॉ. दीपिका वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संचालन बीनम यादव ने किया। इस अवसर पर डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, प्रो. अशोक कुमार, डॉ. यशवेंद्र वर्मा, लव कुमार मौजूद रहे।

बेहतरीन आवाज और जुदा अंदाज से बनेगी पहचान

तिलक पत्रकारिता स्कूल में जरीन नाज ने बताईं रेडियो जॉकी की खूबियां

परिसर संवाददाता

मेरठ। बेहतरीन आवाज और जुदा अंदाज से भी युवा खास पहचान बना सकते हैं। भाषा, उच्चारण, सामान्य ज्ञान और हालात के अनुरूप आचरण एवं अदायगी की खूबियां युवाओं को कॅरिअर की नई ऊंचाइयों प्रदान कर सकती हैं। रेडियो जॉकी के रूप में भी कोई बुजा इन्हीं खूबियों के दम पर अपना प्रभाव दिखा सकता है। यह बात मंगलवार को विवि के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में एफएम रेनबो की रेडियो जॉकी जरीन नाज ने कही।

उन्होंने विद्यार्थियों को रेडियो जॉकी से संबंधित जरूरी जानकारियां दीं। उन्होंने बताया कि विषय के अनुसार किस प्रकार बॉइस मॉडयूलेशन यानी अपनी आवाज में उतार–चढ़ाव लाया जाना चाहिए। अगर कोई युवा अपनी आवाज और उच्चारण पर मेहनत करता है तो रेडियो जॉकी ही नहीं बल्कि वाइस ओवर आर्टिस्ट, डबिंग आर्टिस्ट, एनाउंसर, प्रजेंटर आदि के रूप में कॅरिअर बना सकते हैं। इसके लिए मेहनत करनी होगी। भाषा को जानने के साथ ही उसे सुगमता और रवानगी से बोलना भी सीखना होगा। नुक्ते वाले शब्दों का सही उच्चारण जानना होगा। विषय और मौके की नजाकत के अनुसार शब्दों का चयन करना सीखना होगा।

जरीन नाज ने बताया कि आकाशवाणी में जहां हर रेडियो आर्टिस्ट को बारी बारी से मौका दिया जाता जाता है, वहीं निजी एफएम चौनल में कुछ ही रेडियो जॉकी से काम चलाया जाता है। आरजे या वॉइस ओवर आर्टिस्ट की कोई वैकेंसी नहीं निकलती है, बल्कि ये नियुक्तियां संपर्क और नेटवर्क के जरिए ज्यादा होती हैं। इसलिए जो भी युवा इस क्षेत्र में जाना चाहते हैं, वे अपने बेसिक पर मेहनत करके सबसे पहले ऑडिशन दें।

स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशान्त कुमार ने जरीन नाज का आभार जताया और उम्मीद जताई कि छात्रों के लिए यह आयोजन बेहद उपयोगी साबित होगा।

फोटोग्राफी की बारीकियां सिखाईं

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विवि के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में कैनन कंपनी ने फोटोग्राफी वर्कशॉप का आयोजन किया। वर्कशॉप में टेक्निकल हेड जितेंद्र ने छात्रों को कैमरे के प्रकार और कार्य समझाए। वीडियो और सिनेमा विशेषज्ञ अमित शर्मा ने सिनेमा में प्रयुक्त होने वाले कैमरों की जानकारी दी।

क्विज में दिखाई प्रतिभा

मेरठ। सीसीएस यूनिवर्सिटी के तिलक पत्रकारिता विभाग में वीकेंड अभिव्यक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके तहत जीके क्विज व भाषण कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

भाषण कौशल प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं ने भारत के पहले लोकसभा चुनाव, फैक्ट चेकिंग–डे, अप्रैल फूल डे, हिंदू नव वर्ष, राष्ट्रीय समुंद्री दिवस, भारतीय संगीत और पियर प्रेशर जैसे विषयों पर विचार प्रस्तुत किए.

प्रतियोगिता में कपिल कुमार, प्रेरणा भारती, अब्दुल्ला हसन और अदिति चौधरी ने पुरस्कार प्राप्त किया। जीके क्विज में शिवम तुरैहा विजयी रहे। डॉ. दीपिका वर्मा, लवकुमार सिंह और पीयूष निर्णायक मंडल में शामिल रहे। राकेश कुमार, मितेंद्र गुप्ता भी मौजूद रहे।

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल का भ्रमण

मेरठ। शहीद मंगल पांडे महाविद्यालय की छात्राओं ने तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल का भ्रमण किया। इस दौरान छात्राओं ने लाइब्रेरी का भ्रमण किया। कंप्यूटर लैब में छात्राओं ने किस प्रकार अखबार बनाया जाता है, वीडियो एडिटिंग कैसे की जाती है, इसकी जानकारी हासिल की।

छात्राओं ने स्कूल स्थित कम्युनिटी रेडियो 90.8 रेडियो सीसीएसयू को भी देखा। विभाग की छात्राओं के साक्षात्कार भी लिए। प्रो. मोनिका चौधरी के निर्देशन में आई छात्राओं के कोर्स में कम्युनिकेशन माइनर कोर्स के रूप में है। तिलक पत्रकारिता स्कूल के निदेशक प्रो. प्रशांत कुमार ने छात्राओं को कम्युनिकेशन के विषय में विस्तार से बताया। विषय से संबंधित छात्राओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। इस अवसर पर डा. मनोज श्रीवास्तव, डा. दीपिका वर्मा, लव कुमार, बीनम यादव आदि मौजूद रहे।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादक** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **समाचार संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी चतुर्थ व छठे सेमेस्टर और एमएजेएमसी द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के छात्र–छात्राएं।

छात्रों ने की समाजसेवा : सर छोटूराम इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी के बीएससी कंप्यूटर साइंस ऑनर्स विभाग के छात्र छात्राओं ने सामाजिक दायित्व के अंतर्गत 'दयाल–अपना घर आश्रम' में बुजुर्गो और निराश्रितों के साथ समय व्यतीत किया और उनके अनुभव एवं समस्याएं जानीं।

राजनीति विज्ञान विभाग में 'भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षण प्रशिक्षण' पर दो दिवसीय वर्कशॉप आयोजित

भारत को पुनर्जीवित करनी होगी भारतीय ज्ञान परंपरा

परिसर संवाददाता

मेरठ। भारतीय जीवन दृष्टि एवं ज्ञान परंपरा पर पूरा विश्व स्थित है। भारत है तो विश्व है। परंपराएं कभी खत्म नहीं होती बल्कि वे देशकाल, परिस्थिति के अनुसार बदलती हैं। भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा पुनर्जीवित करनी होगी। दुनिया में शैक्षणिक व्यवस्था में अग्रणी फिनलैंड एवं नार्वे ने भारतीय गुरुकुल प्रणाली को अपना कर ही अपनी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ एवं संपन्न बनाया है। हमें भी प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना होगा।

सीसीएसयू कैंपस के राजनीति विज्ञान विभाग एवं भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षण प्रशिक्षण' पर दो दिवसीय वर्कशॉप के शुभारंभ पर यह बात महाराजा गंगा सिंह विवि राजस्थान के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित ने कही।

प्रो. पवन शर्मा ने कहा कि प्रशासनिक एवं शासकीय इच्छा शक्ति की कमी से अभी तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू नहीं हो पाई थी। विवि भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों पर काम कर रहा है। इससे जुड़ा केंद्र कैंपस में शुरू हो गया है।

प्रो. संजीव शर्मा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा सुदृढ़ एवं सम्पन्न थी। प्रो. काशीनाथ जेना ने कहा कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा पर अभी और अधिक काम करने की जरुरत है। जे. नंदकुमार ने कहा कि बिना गहराई में जाए हम भारतीय ज्ञान परम्परा नहीं जान सकते। हमें औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर निकल भारतीय संस्कृति एवं भारतीय जीवन दृष्टि अपनानी होगी।

चौधरी चरण सिंह विवि के राजनीति विज्ञान विभाग में 'भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षण प्रशिक्षण' पर आयोजित दो दिन की वर्कशॉप में बोलते वक्ता।

प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान आधुनिक सभ्यता का रास्ता हमारी संस्कृति एवं ज्ञान–विज्ञान से होकर जाता है। प्रो. राजवीर सिंह दलाल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन समय से ही समृद्ध एवं उन्नत रही।

प्रो. कौशल किशोर मिश्र ने कहा कि भारत या भारतीय ज्ञान परंपरा में आधुनिक समय का जो ज्ञान–विज्ञान है वह वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद में पहले से विद्यमान है।

प्रो. तेज प्रताप सिंह, आयुषी केतकर, डॉ. सुषमा रामपाल, मुस्कान बंसल, डॉ. चंचल चौहान, डॉ. जयवीर राणा, डॉ. भूपेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. देवेंद्र, डॉ. नितिन त्यागी, डॉ. रवि पोसवाल, यतेन्द्र कुमार, आंचल चौहान, सुमित देशवाल, नन्दनी, प्रियंका तंवर उपस्थित रहे।

कल्याण का मार्ग दिखाती है भारतीय ज्ञान परंपरा

दूसरे दिन डा. हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय सागर मध्य प्रदेश के राजनीति विभान विभाग के प्रोफेसर अनुपम शर्मा ने कहा कि पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान ने विश्व को बांटने का कार्य किया है जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा सभी का कल्याण करने की बात करती है। भारत लोकतंत्र की जननी है। इसमें वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा प्राचीन समय से है।

इतिहास विभाग के प्रोफेसर कृष्णकांत शर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा के पुरातात्विक साक्ष्यों को पीपीटी के माध्यम से दिखाया। उन्होंने सिनौली में मिले मिट्टी के बर्नत, रथ, अस्थियां, अस्त्र–शस्त्र आदि के बारे में बताया। भारतीय संचार संस्थान के महानिदेशक प्रोफेसर संजय द्विवेदी ने कहा कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्यों को अधिक महत्व देना चाहिए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कौशल किशोर मिश्र ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हमें नवीन पाठ्यक्रम बनाना होगा। सीसीएसयू के प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा ने चावार्क दर्शन, बौद्ध दर्शन व जैन दर्शन आदि के बारे में बताया। कला संकाय अध्यक्ष प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कैंसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

मेरठ। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक कैंसर नियंत्रण चुनौती और अवसर था।

विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जितेंद्र सिंह ने कहा कि कैंसर के उपचार में नवीनतम तकनीकों और वैज्ञानिक अविष्कारों की जरूरत है, लेकिन इनका लाभ सभी तक पहुंचाने में कई बार दिक्कतें आती हैं।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर आरसी गुप्ता जी ने कहा जैसे ही हम प्राकृतिक तत्वों से दूर होते जाते हैं, हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉ सुधीर तवर ने कहा कि कैंसर को नियंत्रित करने के लिए विशेषज्ञों के संगठित प्रयासों के बावजूद, इसके सामने कई चुनौतियाँ हैं।

डॉ नवीन कुमार के अनुसार सार्वजनिक जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है। डॉ विनोद त्यागी ने बताया वित्तीय संकट भी एक चुनौती है।

प्रोफेसर वाई विमला ने कहा इन चुनौतियों के बावजूद, कैंसर नियंत्रण में कई अवसर भी हैं। संशोधन और नवाचार द्वारा, नई उपचार पद्धतियों को विकसित किया जा सकता है। कार्यक्रम संयोजक डॉक्टर अंजली मलिक के अनुसार समुदाय की सहभागिता भी एक महत्वपूर्ण अवसर है। संगठनों, सरकारों, और समुदाय के साथ मिलकर कैंसर नियंत्रण कार्यक्रमों को सफल बनाने में सहायक हो सकते हैं।

सीखें आत्मरक्षा के गुर

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र और दिल्ली की संस्था कवच–सेल्फ डिफेंस सिस्टम ने बृहस्पति भवन सभागार में सेल्फ डिफेंस फार गर्ल्स, विषय पर कार्यशाला आयोजित की। कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने छात्राओं का उत्साह बढ़ाया और उन्हें आत्मरक्षा के गुर सीखने के लिए प्रेरित किया।

महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक व कार्यशाला संयोजिका प्रोफेसर बिंदु शर्मा ने छात्राओं को सेल्फ डिफेंस ट्रेनिग की उपयोगिता पर कहा कि मुसीबत के समय में हौसले के साथ बुरी परिस्थिति से बचकर निकला जा सकता है। प्रशिक्षक शशांक अरोडा, वरुण रावत, आरती शर्मा, दिव्या पंवार और अनिकेत ने छात्राओं को सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग दी।

सीसीएसयू ने गोद लिए स्कूलों को दिए कंप्यूटर

मेरठ। सीसीएसयू के सर छोटूराम इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी में उन्नत भारत अभियान प्रकोष्ठ के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव के प्राथमिक विद्यालयों के लिए कंप्यूटर और किताबों का वितरण कार्यक्रम हुआ।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने बच्चों को कंप्यूटर की उपयोगिता व उसके उपयोग के बारे में बताया। इस अवसर पर गुड्डी देवी भदौरा, मनोज देवी मीरपुर, संगीता चौटाला सिखेड़ा, दीपक कुमार लालपुर और वीरपाल सिंह दलमपुर के प्रधान व विद्यार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नीरज सिंघल ने अतिथियों का स्वागत किया।

टेक क्विज में छात्रों ने जीते नकद पुरस्कार

मेरठ। सर छोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज में एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग विभाग में हुई टेक क्विज में छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रतिभा दिखाई। प्रथम विजेता को 25 सौ, द्वितीय को 15 सौ और तृतीय को एक हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। स्टूडेंट क्लब अध्यक्ष शशांक उपाध्याय, तरंग कुमार, शिवांश मिश्रा, वासु, आदित्या, दीया, ऋषभ और देवांग मौजूद रहे।

प्रवेश परीक्षा नहीं, यूजीसी नेट स्कोर पर होंगे पीएचडी में प्रवेश

परिसर संवाददाता

मेरठ। यूजीसी ने विभिन्न विश्वविद्यालयों की ओर से पीएचडी में प्रवेश के लिए कराई जा रही प्रवेश परीक्षाओं पर रोक लगा दी है। पीएचडी में प्रवेश के लिए यूजीसी नेट के स्कोर यानी मेरिट को ही आधार माना जाएगा। नई व्यवस्था जून–2024 में नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से आयोजित यूजीसी नेट परीक्षा से लागू की जा रही है। एनईपी–2020 को लागू करने की दिशा में पीएचडी अभ्यर्थियों को राहत देने के लिए यूजीसी ने नेट पर रिव्यू के लिए विशेषज्ञ समिति बनाई। समिति की ओर से 13 मार्च को यूजीसी की 578वीं बैठक में दिए गए प्रस्तावों को लागू कर दिया गया है।

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC - NET

जून–2024 से नेट अभ्यर्थियों के परिणाम तीन कैटेगरी में जारी होंगे। पहली कैटेगरी में अभ्यर्थी जेआरएफ से पीएचडी में प्रवेश पाने और असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति के लिए योग्य होंगे। दूसरी कैटेगरी में अभ्यर्थी जेआरएफ बिना पीएचडी में प्रवेश और असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति के लिए योग्य होंगे। वहीं, नेट की तीसरी कैटेगरी में सफल अभ्यर्थी केवल पीएचडी में प्रवेश के लिए योग्य होंगे। उन्हें न जेआरएफ मिलेगी और न ही असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति के लिए योग्य होंगे।

नेट का परिणाम परसेंटाइल के साथ ही अंक सहित जारी होगा। यूजीसी नियमावली के अनुसार जेआरएफ प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी साक्षात्कार के आधार पर पीएचडी में प्रवेश लेंगे। वहीं कैटेगरी दो व तीन में 70 प्रतिशत वेटेज नेट स्कोर में मिले अंक और 30 प्रतिशत वेटेज साक्षात्कार का होगा। पीएचडी में प्रवेश नेट स्कोर व साक्षात्कार में मिले अंकों को मिलाकर होगा। कैटेगरी दो व तीन के तहत नेट में मिले अंक पीएचडी में प्रवेश के लिए केवल एक वर्ष तक मान्य होंगे।